15

ताड़नाएं

कुलुस्सियों 4:26

निजी मसीही बर्ताव की बातें लिखने के बाद (3:5-17) पौलुस ने कलीसिया के भीतर विभिन्न समूहों को निर्देश दिए (3:18—4:1)। फिर उसने कुलुस्से की पूरी मण्डली को सम्बोधित किया। उसकी अन्तिम टिप्पणियों में से दो सबक लिए जा सकते हैं: मसीही लोगों के लिए प्रार्थना करने जैसी सकारात्मक गतिविधियों को करना (4:2-4) और खोए हुओं को मसीह में लाने की उसकी विशेष सेवा में लगे होना (4:5, 6)।

प्रार्थना करना, विशेषकर पौलुस के लिए (4:2-4)

[2]प्रार्थना में लगे रहो और धन्यवाद के साथ उस में जागृत रहो। [3]और इस के साथ ही हमारे लिए भी प्रार्थना करते रहो, कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे, कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें जिस के कारण मैं कैद में हूं। [4]और उसे ऐसा प्रकट करूं, जैसा मुझे करना उचित है।

''प्रार्थना में लगे रहो'' (4:2)

अपने कई पत्रों के अन्त के निकट पौलुस ने अपने पाठकों को प्रार्थना में समय देने के लिए प्रोत्साहित किया[1] और आम तौर पर उन्हें अपने लिए प्रार्थना करने को कहा।[2] कुलुस्सियों से उसने कहा, **प्रार्थना में लगे रहो** (*proskartereō*)। *Proskartereō* का सम्बन्ध प्रार्थना में बने रहने (देखें प्रेरितों 1:14; 2:42; 6:4; रोमियों 12:12) या अन्य गतिविधियों में लगे होने (देखें मरकुस 3:9; प्रेरितों 2:46; 8:13; 10:7; रोमियों 13:6) से जुड़ा है। यीशु ने अपने चेलों को प्रार्थना करने और हियाव न छोड़ने या हिम्मत न हारने को समझाया (लूका 11:5-13; 18:1-8)।

''प्रार्थना'' (*proseuchē*) शब्द का इस्तेमाल धन्यवाद के बजाय याचना के लिए अधिक हुआ है (मरकुस 9:29; 12:5; रोमियों 1:10; 15:30; याकूब 5:17)। कुलुस्से के मसीही लोगों के लिए अपने और अपने साथियों के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करना, विनती करना आवश्यक था। अन्य पत्रों में उसने अपनी ओर से प्रार्थनाएं किए जाने की विनती के बाद प्रार्थना में बने रहने का आग्रह किया (इफिसियों 6:18-20; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17, 25)। पौलुस एक-दूसरे के लिए प्रार्थना को बड़ा महत्व देता था, क्योंकि वह बार-बार दूसरों के लिए प्रार्थना करता और उन्हें अपने लिए प्रार्थना करने को कहता।

''धन्यवाद के साथ उस में जागृत रहो'' (4:2)

कुलुस्सियों के लिए सचेत और चौकस अर्थात **जागृत** (*grēgoreō*) रहना आवश्यक था। यीशु ने जागते रहने को कहा ताकि लोग उसके वापस आने के लिए तैयार हों (मत्ती 24:42; 25:13; लूका 12:37, 39)। पौलुस नहीं चाहता था कि उसके भाई परीक्षा या बुराई से दब जाएं (1 कुरिन्थियों 16:13; 1 थिस्सलुनीकियों 5:6) या झूठे शिक्षकों द्वारा भ्रमित किए जाएं (प्रेरितों 20:31)।[3] यीशु ने गतसमनी बाग में पतरस, याकूब और यूहन्ना को समझाया कि ''जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो, कि तुम परीक्षा में न पड़ो ...'' (मत्ती 26:41)।

जागृत रहने की आज्ञा इस बात का संकेत देती है कि खतरा बरकरार है। भलाई के व्यस्त विरोधी शैतान के पास अपने झूठ और भ्रमित करने वाले ढंग हैं (यूहन्ना 8:44; 2 कुरिन्थियों 2:11; 11:3)। मसीही लोगों को जागृत रहना आवश्यक है, क्योंकि वह आत्मिक, नैतिक, डॉक्ट्रिन के, शारीरिक, सामाजिक, मनोरंजक तथा वित्तीय मामलों में ऐसी परीक्षाएं लाता है। बचाव के अपने कवच को गिराने से हम उसके विरुद्ध लड़ने में असावधान हो सकते हैं। परमेश्वर ने रक्षा के लिए मसीही लोगों को आत्मिक हथियार दिए हैं, परन्तु हमें उन हथियारों को पहनकर चौकस रहते हुए और प्रार्थना करते हुए लड़ाई के लिए दिलेर होना आवश्यक (इफिसियों 6:10–18) है।

उस में (*en autē*) रहने को कह कर पौलुस प्रार्थना करने की बात कर रहा था। कुलुस्सियों के लिए जागृत रहने का ढंग प्रार्थना में बने रहना था, जो कि संसार के जैसे बनने से उलट है, जो नींद में डूबा हुआ है और शैतान द्वारा उस पर कब्जा किया गया है।

कुलुस्सियों में यह ताड़ना सातवीं बार है, जिसे पौलुस ने धन्यवाद के साथ जोड़ा (देखें 1:3, 12; 2:7; 3:15, 16, 17)। आम तौर पर उसने **धन्यवाद के साथ** प्रार्थना को जोड़ा।[4]

''और इस के साथ ही साथ हमारे लिए भी प्रार्थना करते रहो,
कि परमेश्वर हमारे लिए वचन सुनाने का ऐसा द्वार खोल दे'' (4:3)

प्रार्थना करते रहो वर्तमान काल में है, जो इस बात का संकेत है कि पौलुस चाहता था कि उसके और उसके साथियों के लिए प्रार्थनाएं की जाती रहें। उसने ''मेरे'' के सम्पादकीय अर्थ में **हमारे** इस्तेमाल किया होगा, क्योंकि उसने लिखकर आगे कहा कि भाई प्रार्थना करें कि ''हम वर्णन कर सकें'' (आयत 3) और ''और उसे ऐसा प्रकट करूं'' (आयत 4)। उसके कहने का अर्थ अपने साथियों के लिए भी होगा, जो सिखा रहे होंगे। यदि ऐसा है तो आयत 3 में उसने सामान्य अर्थ में उन्हें शामिल करते हुए आयत 4 में विशेष अर्थ में अपने लिए कहा।

न केवल पौलुस ने कुलुस्सियों को सामान्य अर्थ में प्रार्थना करने का आग्रह किया बल्कि उसने विशेष बातों के नाम भी बताए, जिसके लिए प्रार्थना की जानी थी। उसने यह विनती नहीं की कि उसके जेल से छूट जाने की प्रार्थना करें, बल्कि यह कहा कि **परमेश्वर ... ऐसा द्वार खोल दे** जिससे उसे सुसमाचार सुनाने का अवसर मिल सके। अन्य आयतों में उसने इसी रूपक का इस्तेमाल किया (1 कुरिन्थियों 16:9; 2 कुरिन्थियों 2:12)। ''द्वार खोल'' देने की उसकी विनती वचन को सुनाने के अवसर की अपील थी। यह घर के किसी मालिक द्वारा आने वाले किसी मेहमान के स्वागत के लिए अपना द्वार खोल देने की कल्पना है। यहूदियों ने और अन्यजातियों ने भी कई स्थानों पर अपनी मिशनरी यात्राओं के दौरान उन्हें सुसमाचार बताने के

पौलुस के प्रयासों पर दरवाज़ा धम से बंद कर दिया था (प्रेरितों 13:50; 14:5, 6; 17:10, 13; 1 थिस्सलुनीकियों 2:14-16)। परन्तु लूका ने लिखा है कि लोग पौलुस को जेल में सुनने के लिए आते थे। जिसमें वह "जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक-टोक निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु की बातें सिखाता रहा" (प्रेरितों 28:30, 31)। फिलिप्पियों के नाम ख़त में पौलुस ने लिखा:

> हे भाइयो, मैं चाहता हूं कि तुम यह जान लो, कि तुझ पर जो बीता है, उस से सुसमाचार ही की बढ़ती हुई है। यहां तक कि कैसरी राज्य की सारी पलटन और शेष सब लोगों में यह प्रकट हो गया है कि मैं मसीह के लिए कैद हूं। और प्रभु में जो भाई हैं, उन में से बहुधा में कैद होने के कारण, हियाव बान्ध कर, परमेश्वर का वचन निधड़क सुना कर और भी हियाव करते हैं (फिलिप्पियों 1:12-14)।

अपनी हानि में उसे एक लाभ मिल गया। पौलुस अपने आपको "ज़ंजीर से जकड़ा हुआ राजदूत" मानता था (इफिसियों 6:20)।

जेल से लिखी पौलुस की पत्रियों का संसार पर बड़ा प्रभाव था। उसने अपने पहले कारावास के दौरान इफिसियों, फिलिप्पियों, कुलुस्सियों और फिलेमोन नामक पुस्तकें लिखीं और अपने दूसरे कारावास के दौरान उसने 2 तीमुथियुस लिखा। सदियों से इन पत्रों के द्वारा पौलुस मसीह के ढंगों को लोगों को बताता आ रहा है।

फिर पौलुस ने **वचन** (*logos*) की बात की। शब्द वे वाहन हैं, जिन पर सवार होकर संदेश दूसरे तक पहुंच जाता है। अविश्वासियों ने भी संदेश को सुन लेना था यदि वह "वचन" जिसमें वह संदेश था उनके कानों में पड़ जाता। पौलुस खोए हुओं से बात करने के योग्य होने का ढंग पाने का इच्छुक था। उसकी ज़ंजीरों ने उसे बांध रखा था कि वह लोगों तक न जाए। इस कारण लोगों को ही संदेश सुनने के लिए उसके पास आना पड़ता था।

परमेश्वर का वचन आवश्यक है, जैसा कि नीचे लिखी बातों से पता चलता है:

- यह जीवन-दायक और सामर्थ से भरा है (यूहन्ना 6:63; इब्रानियों 4:12)।
- यह पाप से स्वतन्त्रता दिलाता है (यूहन्ना 8:32)।
- यह पवित्र किए जाने का आधार है (यूहन्ना 17:17)।
- यह उद्धार दिलाता है (प्रेरितों 11:14)।
- यह विश्वास का कर्त्ता है (रोमियों 10:17)।
- यह हृदय को पवित्र कर देता है (1 पतरस 1:22)।
- यह नया जन्म देता है (1 पतरस 1:23)।

जिन लोगों को उसके वचन से आशीष मिली है, वे इसे अपने साथ रखते और इसे मानते हैं। वचन को सही ढंग से ग्रहण किया जाना, सम्भाला जाना और सुनाया जाना आवश्यक है (1 थिस्सलुनीकियों 2:13; 2 तीमुथियुस 2:15; 4:2)।

वचन के प्रचार के अवसर के लिए द्वार परमेश्वर ही खोल सकता है, परन्तु इसे सुनाने के

लिए द्वार के भीतर जाने का काम संदेश सुनाने वाले का ही है। परमेश्वर ने अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया (प्रेरितों 14:27); परन्तु पौलुस और बरनबास उसके प्रतिनिधि थे, जो उद्धार का उपदेश सुनाने के लिए उस द्वार के भीतर गए। बोलने का अवसर मिलने का अर्थ यह नहीं था कि संदेश को ग्रहण भी कर लिया जाएगा, क्योंकि वचन को मानने की ज़िम्मेदारी सुनने वालों की है (प्रेरितों 2:41; 11:1; याकूब 1:21)। कइयों ने पौलुस द्वारा उन्हें सुनाए गए वचन को मानने से इनकार कर दिया (देखें प्रेरितों 13:46)।

''कि हम मसीह के उस भेद का वर्णन कर सकें
जिस के कारण मैं कैद में हूं'' (4:3)

1:26, 27 की तरह पौलुस ने **भेद** (*mustērion*) की बात की। **मसीह** से सम्बन्धित प्रकाशन पुराने नियम में छुपा हुआ भेद था। परन्तु नये नियम में उस भेद को प्रकट कर दिया गया है (रोमियों 16:25, 26; इफिसियों 3:3-5; 1:26 पर चर्चा देखें)। पौलुस का लक्ष्य था ''कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बता सकूं'' (इफिसियों 6:19)।

मसीह के भेद को बताने के कारण पौलुस **कैद में** था। ''कैद में'' के लिए शब्द *deō* का मूल अर्थ ''बंधा हुआ'' है।[5] पौलुस ने इसका इस्तेमाल ''परमेश्वर का वचन कैद नहीं'' (2 तीमुथियुस 2:9) लिखने के समय और यह कहने के समय किया कि विवाहित स्त्री व्यवस्था के अनुसार अपने पति ''से बंधी'' है (रोमियों 7:2; 1 कुरिन्थियों 7:27, 39)।

कुलुस्सियों में एक जगह पौलुस ने अपने कैद में होने से जुड़े अपने कष्ट का संकेत दिया (1:24; 4:7-9)। फिलिप्पियों 1:7, 13, 14, 17; कुलुस्सियों 4:18; 2 तीमुथियुस 2:9; और फिलिप्पियों 10, 13 ने उसने अपने कैद में हुए या ''बंधनों'' (*desmos*) की बात की।

रोम में पहुंचने पर पौलुस को कम से कम दो वर्ष तक ''एक सैनिक के साथ, जो उसकी रखवाली करता था, अकेले रहने की आज्ञा मिल गई'' (प्रेरितों 28:16)। पौलुस चाहे ज़ंजीरों में था (इफिसियों 6:20) और सिपाही उसकी रखवाली करता था, परन्तु उसने भाड़े का घर लिया हुआ था। लोग खुलेआम उसके पास आकर रुकते थे (प्रेरितों 28:30, 31)। इस आयत में पौलुस ने ''हमारे'' से ''मैं'' में वाक्य को बदल दिया। इसका उद्देश्य दूसरों की स्थिति से उसका अपनी स्थिति को अलग करना हो सकता है। पीटर टी. ओ' ब्रायन ने कहा है, ''एकवचन में बदलाव स्वाभाविक था, क्योंकि वह उससे जो उसके और दूसरों के लिए सामान्य था, उसकी ओर गया जो उसके लिए विशेष था। ...''[6]

इस समय पौलुस रोम में कैद में था, क्योंकि यहूदियों के हाथों में पड़ने से जो उसकी हत्या करवाना चाहते थे, कैसर द्वारा मुकदमे के लिए जेल में प्रतीक्षा करना बेहतर था (प्रेरितों 25:1-3)। उसने रोमी सरकार की सुरक्षित कस्टडी में बने रहने के लिए कैसर को अपील की (प्रेरितों 25:8-12)। उसकी अपील के बाद उसे बंधे हुए रोम में भेज दिया गया। रोमी नागरिक के रूप में यह उसका अधिकार था।

''और उसे ऐसा प्रकट करूं, जैसा मुझे करना उचित है'' (4:4)

कुलुस्से के लोगों से अपनी प्रार्थनाओं में उसकी दो विनतियों को शामिल करने को कहा:

कि उसे वचन सुनाने के अवसर मिल सकें और वह खुलकर और समझ आने योग्य ढंग में वचन सुना सके। उन्हें यह प्रार्थना करने की कि वह संदेश निडरता से, अनुग्रह से और समझदारी से दे सके। उसने उन से उसके या उसके साथियों के लिए व्यक्तिगत आशिषें पाने की विनती नहीं की; बल्कि उसकी चिंता अपने संदेश को सुनाने की थी कि लोग उसे समझ सकें।

प्रकट करूं यूनानी भाषा में एक शब्द (*phaneroō*) उसी शब्द से है जिसका अनुवाद 1:26 में "प्रकट" और 3:4 में "प्रकट" हुआ है। पौलुस ने यह नहीं कहा कि परमेश्वर सुनने वालों को समझा दे, उसकी अपनी ज़िम्मेदारी थी और उनकी अपनी। अपने सुनने वालों को प्रभावित करने के लिए बोलने में निपुणता की इच्छा करने के बजाय वह चाहता था कि उसकी बातें स्पष्ट और आसानी के साथ समझ आने वाली हों। वह प्रभावित करने के बजाय ज्ञान देना चाहता था (देखें 1 कुरिन्थियों 2:1)।

प्रेरित चाहता था कि वह ऐसे बोले, **जैसा** उसे बोलना **उचित** है [*dei*]। इस बात में अनिवार्यता, कर्त्तव्य, दायित्व और अपरिवर्तनीय शब्द शामिल हैं। *Dei* का अनुवाद आम तौर पर "अवश्य" होता है (देखें मत्ती 23:23; 24:6; लूका 2:49; 9:22; यूहन्ना 4:24; 12:34; प्रेरितों 4:12; 9:6.)

उद्धार देने की सामर्थ संदेश में है (प्रेरितों 11:14; रोमियों 1:16) न कि संदेश देने वाले में। फिर भी संदेश देने वाले का जीवन और चाल ऐसी होनी चाहिए कि वह संदेश के लिए रुकावट न बने। प्रेम से और सही ढंग से बताया गया तथ्य वह माध्यम है जिसे परमेश्वर ने खोए हुओं का उद्धार करने के लिए चुना है।

बाहर वालों के साथ बुद्धिमानी से कार्य करना (4:5, 6)

[5]अवसर को बहुमूल्य समझकर बाहर वालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो। [6]तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो, कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए।

मसीही जीवन न केवल परमेश्वर के साथ और कलीसिया के बीच हमारे सम्बन्धों के सम्बन्ध में नहीं है बल्कि संसार के सामने ठहराने वाले उदाहरणों में भी है। पौलुस ने कुलुस्सियों को चार मार्गदर्शन दिए कि बाहर वालों के साथ उनका बर्ताव कैसा हो।

"अवसर को बहुमूल्य समझकर" (4:5)

बर्ताव पर अपने जोर देने की बात को समझाने के लिए पौलुस ने बाजार से एक शब्द उठा लिया। **बहुमूल्य समझकर** (*exagorazomenoi*) जिसका इस्तेमाल इफिसियों 5:16 में इसी प्रकार से हुआ, का मूल अर्थ "मोल लेना" या किसी प्रकार का हर उपलब्ध उत्पाद खरीद लेना है। इस शब्द का अर्थ "छुड़ाना" भी है (गलातियों 3:13; 4:5)।

अवसर (*kairos*) या "समय," समय के सही-सही प्वायंट का संकेत नहीं देता (गलातियों 6:9, 10; 1 पतरस 5:6), परन्तु इसे समय की अवधि के लिए इस्तेमाल किया जा

सकता है (1 कुरिन्थियों 7:5, 29; 2 तीमुथियुस 4:3; 1 पतरस 1:5)। *Kairos* का अनुवाद ''ऋतु'' (प्रेरितों 14:17; गलातियों 4:10) और ''कालों'' (प्रेरितों 1:7; 1 थिस्सलुनीकियों 5:1) भी हुआ है, चाहे आम तौर पर यह ''समय'' या ''समयों'' के रूप में मिलता है।

मूल अनुवाद ''पूरा समय मोल लेते रहना'' है। एक और अनुवाद ''जो समय तुम्हारे पास है उसका लाभ लेते रहना'' या ''अपने समय का इस्तेमाल भरपूरी से करना'' है। मसीही लोगों को बेकार नहीं होना चाहिए, बल्कि यीशु की योग्य सेवा के लिए हर अवसर का बेहतरीन इस्तेमाल करना चाहिए।

पौलुस को कुलुस्सियों से यीशु की सेवा करने की उम्मीद तब थी जब बाधाएं थीं। हर अवसर के साथ कठिनाई होती है, परन्तु हर कठिनाई में अवसर होता है। कार्यवाही करने में कायर लोगों को अपने अवसरों का लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित होना चाहिए।

यीशु समय का बड़ा ध्यान रखता था। उसने अपने चेलों को बताया, ''जिस ने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आने वाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता'' (यूहन्ना 9:4)। लगा तो नहीं कि वह कभी जल्दी में हो पर वह उसे करने के लिए जो उपयुक्त है, उसमें व्यस्त रहता था। उसने कभी समय नहीं गंवाया।

''बाहर वालों के साथ बुद्धिमानी से बर्ताव करो'' (4:5)

बर्ताव करो (*peripateite*) का मूल अर्थ मध्यम पुरुष अवश्यमाननीय में ''चलना'' है (4:5; मत्ती 4:18; 9:5; 1 यूहन्ना 1:6)। *Peripateō* में व्यक्ति के व्यवहार, जीने या काम करने के उसके ढंग की झलक भी हो सकती है (मरकुस 7:5; यूहन्ना 8:12; 11:9, 10; 12:35)। पौलुस के लेखों के बाहर इस क्रिया के और अर्थ ''भरमाए'' जाना (इब्रानियों 13:9) और ''फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8) सहित पौलुस के लेखों के बाहर मिलता है। पौलुस ने *peripateō* का इस्तेमाल कभी चलने के शारीरिक अर्थ में नहीं किया, बल्कि केवल व्यवहार के प्रतीकात्मक अर्थ में किया (कुलुस्सियों 1:10; 2:6; 3:7; 4:5)।

बाहर वालों या अविश्वासियों **के साथ बुद्धिमानी** [*sophia*] से काम करने के विस्तृत परिणामों में नहीं गया। अन्य पत्रों में उसने इस बात पर चर्चा की कि मसीही लोगों का बर्ताव कैसा हो, जिससे मसीह की देह या उसकी देह के बाहर वाले लोगों को ठोकर न लगे (रोमियों 14:1–21; 1 कुरिन्थियों 8:8–13; 9:19–23; 10:31–33)। ''बाहर वालों'' (*tous exō*) जो मूलतया ''बाहर'' [के लोग] हैं, से पौलुस का अभिप्राय वे लोग थे जो मसीह की देह से बाहर थे। कुलुस्सियों को उनके साथ अपने मेल-जोल में बुद्धिमानी दिखानी आवश्यक थी। बुद्धि वे परमेश्वर से विश्वास से मांग कर (याकूब 1:5, 6) और परमेश्वर की प्रकट इच्छा से ज्ञान से भरकर (कुलुस्सियों 1:9) पा सकते थे।

कुछ लोग मसीही लोगों से अप्रसन्न थे और उनके साथ कठोर थे। ''उदाहरण के लिए [मसीही लोगों] को *नास्तिक* कहा जाता था क्योंकि वे दिखाई देने वाले किसी देवता की पूजा नहीं करते थे, *देशद्रोही* कहते थे, क्योंकि वे सम्राट की मूर्ति के सामने धूप नहीं जलाते थे, और *अनैतिक* कहते थे क्योंकि आवश्यकता के कारण वे अक्सर बंद दरवाजों के पीछे इकट्ठा होते थे।''[16]

पौलुस ने मसीही लोगों को लिखा, ''तुम न यहूदियों, न यूनानियों, और न परमेश्वर की कलीसिया के लिए ठोकर के कारण बनो'' (1 कुरिन्थियों 10:32)। उनके जीवनों का सावधानी

से चलने वाले होना आवश्यक था। उन्हें "निर्दोष और भले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर की निष्कलंक सन्तान बने" रहना था, जिन के बीच में वे "जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों की नाईं दिखाई देते" थे (फिलिप्पियों 2:15)। वे यीशु को अपने द्वारा चमकने देकर अंधकार में संसार के लिए ज्योतियां बन सकते थे (मत्ती 5:14-16)।

"तुम्हारा वचन सदा अनुग्रह सहित और सलोना हो" (4:6)

फिर पौलुस ने **वचन** की चिंता की बात की। *Logos* जिसका अनुवाद अधिकतर "वचन" होता है, कुलुस्सियों में और भी कहीं मिलता है (1:5, 25; 3:16, 17; 4:3)। पौलुस यहां पर सुसमाचार संदेश की बात नहीं कर रहा था। इसके बजाय उसके कहने का अर्थ शब्दों का वाहन था जिसके द्वारा संदेश संचारित होता है। परमेश्वर का संदेश संचारित करने के लिए उपयुक्त शब्दों का होना आवश्यक था।

उसने स्पष्ट किया कि मसीही लोगों के वचन **अनुग्रह सहित** (*en chariti*) बोले जाएं। *Charis* का अर्थ चाहे "धन्यवादी होना" (देखें 3:16) हो सकता है, परन्तु पौलुस के मन में यहां बोलने की चीज़ और ढंग की बात होती है। वह उन्हें आकर्षक और मन भावनी शैली में उनके वचनों की बातें सत्य होनी थी और उसकी प्रस्तुति किसी को ठोकर न दिलाने वाली होनी थी। उन्हें सुनने वालों की चिंता वाले मन से स्वीकार्य वचन बोलने चाहिए थे। इफिसियों से "प्रेम में सच्चाई से" बोलने को कहने के समय पौलुस के मन में यही बात होगी (इफिसियों 4:15)।

कुलुस्सियों को इस ढंग से बोलना आवश्यक था, जिससे सुनने वाले परेशान न हों। संदेश के कारण बेशक कुछ लोगों को ठोकर लग सकती थी, परन्तु उन्हें संदेश देने वाले के शब्दों के चयन से ठोकर नहीं लगनी चाहिए थी। आज के मसीही लोगों की तरह इन भाइयों को अपनी बातचीत, रूखेपन, गंवारपन और भ्रष्टता से मुक्त रखनी आवश्यक थी। गंदगी के बजाय उन्हें शुद्ध विचार बोलने चाहिए थे, जिन से सुनने वालों का सुधार हो।

पौलुस ने कुलुस्सियों की बोल-चाल में **सलोना** (*halas*) **होने** [*artuō*] के लिए स्वादिष्ट, समझ-बूझ से, मनोहर और स्वीकार्य स्वाद वाली होने की उम्मीद थी। उन्हें कठोर, निर्मोही या निर्दयी शब्दों का इस्तेमाल नहीं करना था। जिस प्रकार से नमक भोजन के स्वाद को बढ़ा देता है, कुलुस्सियों को उसी प्रकार अपनी वाणी में स्वाद को बढ़ाना आवश्यक था ताकि यह सुनने वालों के कानों में मिठास भरी लगे। एच. सी. जी. माउल ने यह ध्यान दिलाते हुए कि नमक का प्रयोग चीज़ों को खराब होने और गलने से बचाने के लिए भी किया जाता था, पौलुस के विवरणात्मक वाक्यांश को गहराई से समझने को कहा। पौलुस ने लिखा, "कोई गन्दी ["भ्रष्ट"; KJV; NKJV] बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो" (इफिसियों 4:29)। उनकी वाणी में "नमक" छिड़कने से अभिव्यक्ति की अशुद्धता और गंदगी को निकालकर उनके अनुग्रहपूर्ण शब्दों को बढ़ाकर "वाणी के मधुर 'स्वाद' और 'अच्छी प्रेरणा' बन जाना था।"[8]

"कि तुम्हें हर मनुष्य को उचित रीति से उत्तर देना आ जाए" (4:6)

पौलुस ने मसीही संवाद के सावधानी से होने के महत्व पर ज़ोर दिया। कुलुस्सियों को सुनने

वालों के लिए अच्छा समय, सही संदेश, सम्भावित प्रभाव को और सच्चाई के प्रति वफ़ादारी को ध्यान में रखना आवश्यक था। उनका लक्ष्य था कि सही शिक्षा के साथ सही लोगों के लिए सही समय पर सही शब्दों का इस्तेमाल होना चाहिए। हर मसीही को चाहे वह सुसमाचार प्रचारक नहीं है परन्तु हर किसी को हर स्थिति में सार्थक और विनम्र ढंग से उत्तर देने के लिए तैयार होना चाहिए। पौलुस ने लिखा, ''मसीह को प्रभु जानकर अपने-अपने मन में पवित्र समझो, और जो कोई तुमसे तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिए सर्वदा तैयार रहो, पर नम्रता और भय के साथ'' (1 पतरस 3:15)। दूसरों के साथ सोच समझकर बातचीत करने के लिए उनकी भावनाओं और रुचियों को समझने का गहन प्रयास करना आवश्यक है। **आ जाए** कह कर पौलुस ने परिचित शब्द *ginōskō* का इस्तेमाल नहीं किया, जिसका अर्थ ''किसी माध्यम से जानकारी प्राप्त करना'' है;[9] इसके बजाय उसने *eidenai* (*oida* से), ''अनुभव से समझना'' का इस्तेमाल किया। कुलुस्सियों को अनुग्रहपूर्वक वचनों का इस्तेमाल करने के कारण **हर मनुष्य को** स्वीकार योग्य ढंग से **उत्तर देना** आवश्यक था।

प्रासंगिकता

अंतिम टिप्पणियां (4:2-6)

अपने पत्र को समाप्त करते हुए पौलुस ने मसीह के पीछे चलने के महत्वपूर्ण पहलुओं की अपनी सूची को अंतिम रूप दिया। हमें (1) जागते और प्रार्थना करते, (2) मिशन कार्य करने वालों को प्रार्थना में शामिल करना, (3) गैर-मसीही लोगों के साथ सही बर्ताव करना, और (4) सदैव सहायक बातचीत का इस्तेमाल करना आवश्यक है।

समर्पित प्रार्थना में चौकस रहो। हमें प्रार्थना को प्राथमिक बनाना आवश्यक है, जैसे पौलुस ने अपने सब पत्रों में बनाया। इस छोटे से पत्र के आरम्भ में और अन्त में उसने पांच बार प्रार्थना की बात की (1:3, 9; 4:2, 3, 12)।

हमारी समय-सारिणी कम महत्वपूर्ण गतिविधियों से इतनी भरी होती है कि हमें प्रार्थना करने का समय ही नहीं मिल पाता। पहली सदी के लोगों के जीवन इनती विभिन्न बातों से भरे हुए नहीं थे, जितने आज के लोगों के जीवन। शायद इन आरम्भिक मसीही लोगों के पास प्रार्थना करने के लिए अधिक समय था। परन्तु इसके बावजूद उन्हें प्रार्थना के लिए अपने आपको समर्पित करने के लिए प्रोत्साहित किए जाने की आवश्यकता थी।

समर्पित होने का अर्थ किसी कारण या व्यवहार के लिए अपना समय और ध्यान देना है। हम खेलों की टीमों, टेलीविज़न के कार्यक्रमों और मनोरंजन की गतिविधियों को समर्पित हो सकते हैं। इन में दिन बिताने के बाद महत्वपूर्ण प्राप्ति कुछ नहीं होती।

हम में से कइयों की समस्या यही है कि हम अपने आपको परमेश्वर से संवाद करने से रोकने के लिए ध्यान हटाने वाली बातों को अनुमति देकर प्रार्थना करने के अवसरों को कुचल देते हैं। ये बाधाएं हमें परमेश्वर के साथ बहुमूल्य पलों को साझा करने से रोकने के लिए शैतान की ओर से हो सकती हैं। वे बातें जो प्रार्थना करने के हमारे अवसरों को छीन लेती हैं वे ऐसे बोझ हैं जिन्हें हमें उतार देना आवश्यक है (इब्रानियों 12:1)।

हमें चौकस रहना आवश्यक है क्योंकि शैतान इस खोज में रहता है कि हमें ''फाड़ खाए'' (1 पतरस 5:8)। हम में से किसी को भी परीक्षाओं में छूट नहीं है। उसने यीशु की परीक्षा ली (मत्ती 4:1) और पतरस को गेहूं के समान फटकना चाहा (लूका 22:31)। बाग में यीशु ने पतरस, याकूब और यूहन्ना को समझाया था, ''जागते रहो, और प्रार्थना करते रहो कि तुम परीक्षा में न पड़ो ...'' (मत्ती 26:41)।

प्रचारकों के लिए प्रार्थना करो। पौलुस ने अपनी ओर से प्रार्थनाएं किए जाने की विनती की। जिसके लिए उसने नहीं कहा वह उतना ही महत्वपूर्ण है, जितना वह जिसके लिए उसने विनती की। उसने मसीह में अपने भाइयों और बहनों से यह नहीं कहा कि वे प्रार्थना करें कि उसे धन मिल जाए, ग्रहण करने वाले हृदय मिल जाएं, बहुत से लोग उसे ग्रहण करें और लोगों के मनपरिवर्तन हों, आसान समयसारिणी, परेशानियों से छूट, आरामदायक स्थान, धनवान और प्रसिद्ध लोगों द्वारा आज्ञापालन, बड़ी और प्रतिष्ठित मण्डलियां हों या किसी और प्रकार की शारीरिक सुविधा नहीं मांगी। पौलुस ने कहा कि कुलुस्से के लोग वचन के लिए खुले द्वार के लिए प्रार्थना करें कि मसीह का भेद बताने का अवसर मिले और वह उसे साफ-साफ बता सके। उसकी विनती प्रचारकों के लिए प्रार्थना किए जाने के समय हमारे लिए एक नमूना हो सकती है।

''खुले द्वार'' से पौलुस के कहने का अभिप्राय वचन को सुनाने का अवसर था। अपनी पहली मिशनरी यात्रा से लौटने के बाद पौलुस ने बताया था कि ''परमेश्वर ने अन्यजातियों के लिए विश्वास का द्वार खोल दिया'' (प्रेरितों 14:27)। उसने इसी अलंकार का इस्तेमाल कुरिन्थियों को लिखते समय किया था। उसने इफिसुस में रहते समय (1 कुरिन्थियों 16:9) और त्रोआस में रहते समय (2 कुरिन्थियों 2:12) ''द्वार खुला'' होने की बात की।

उसकी मिशनरी यात्राओं के दौरान बोलने के द्वार अक्सर बंद होते थे, जिससे पौलुस किसी विशेष स्थिति में वचन को नहीं सुना सकता था (प्रेरितों 13:50; 17:5-10, 13)। यहूदियों के सम्बन्ध में उसने लिखा कि वे ''अन्यजातियों से उन के उद्धार के लिए बातें करने से हमें रोकते हैं'' (1 थिस्सलुनीकियों 2:16)। पौलुस चाहता था कि उसे इस प्रकार से रोका न जाए बल्कि उसे वचन का प्रचार करने की छूट हो।

गैर मसीही लोगों के साथ सही बर्ताव करें। मसीही लोगों के रूप में हमारी सबसे बड़ी सामर्थ मसीह जैसे जीवन बिताने से मिलती है। हम पृथ्वी का नमक (मत्ती 5:13), जगत की ज्योति, पहाड़ पर बसा नगर (मत्ती 5:14), अपने आस-पास के लोगों द्वारा पढ़ा जाने वाला पत्र हैं (2 कुरिन्थियों 3:2)। अपने जीवनों से और एक-दूसरे के लिए अपने प्रेम से हम सब लोगों को दिखा सकते हैं कि हम यीशु के चेले हैं।

ध्यान रखें कि हमारी बोल-चाल सुनने वालों के लिए सहायक हो। जैसे नमक खाने का स्वाद बढ़ा देता है, वैसे ही हम जो कुछ कहते हैं, वह महत्वपूर्ण होता है। हम प्रेम में सच्चाई से बोलें (इफिसियों 4:15, 25) और सुलैमान की समझदारी भरी सलाह को मानें: ''कोमल उत्तर सुनने से जलजलाहट ठण्डी होती है, परन्तु कटुवचन से क्रोध धधक उठता है'' (नीतिवचन 15:1)।

जो कोई हम से हमारे विश्वास के विषय में पूछे, हम उसे उसका उत्तर देने को तैयार हों। हमारे उत्तर ''नम्रता और भय के साथ'' हों (1 पतरस 3:15)। पौलुस ने इफिसियों को लिखा, ''कोई गन्दी बात तुम्हारे मुंह से न निकले, पर आवश्यकता के अनुसार वही जो उन्नति के लिए

उत्तम हो, ताकि उस से सुनने वालों पर अनुग्रह हो'' (इफिसियों 4:29)।

मसीही लोगों के रूप में हमें प्रार्थना पर और जीने पर ऐसे ध्यान देना आवश्यक है जैसे मसीह हम में जीवित हों।

ज्योतियों की तरह रहो (4:5, 6)

मसीही लोग उनके प्रति जो खोए हुए हैं समझदारी से काम करें (आयत 5)। हमें अंधेरे संसार में ज्योतियां बनना आवश्यक है (फिलिप्पियों 2:14-16)। खोए हुए लोग मसीही लोगों के जीवनों को देखकर यीशु के ढंगों को सीख सकते हैं: कारोबार में ईमानदारी से काम करना, निष्ठुर लोगों के प्रति दयालुता दिखाना, ज़रूरतमंदों की मदद करना, सोच-समझकर बोलना, मन के शुद्ध और हर कम में यीशु के जैसे होना (देखें मत्ती 5:13-16)।

मसीही लोग हर अवसर का लाभ उठाएं (आयत 5)। भलाई के लिए न केवल हमें दूसरों को प्रभावित करने के लिए अवसरों को नज़रअंदाज़ न करने में चौकस, बल्कि खोए हुओं को मसीह के लिए पाने के ढंगों को भी तलाशते रहना आवश्यक है। पौलुस मसीह के लिए हर किसी तक पहुंचने के अवसरों की तलाश में रहता था (रोमियों 1:13-15; 1 कुरिन्थियों 9:19-23; 10:33)। यहूदियों द्वारा उसकी हत्या की कोशिश में उसे पकड़ने के बाद भी जब वह घायल और लहूलुहान था, उसने यीशु के लिए उन्हें जीतने के लिए उनसे बात करने की अनुमति मांगी (प्रेरितों 21:31, 36, 39)।

मसीही लोग दूसरों को उत्तर देनें में अनुग्रहकारी भाषा का इस्तेमाल करें (4:6)। व्यक्ति की बोल चाल उसके मन की बातों को निकाल कर प्रकट कर देती है कि उसकी सोच क्या है (मत्ती 12:34; 15:18, 19)। उचित शब्दों को बोलने के लिए मसीही लोगों के विचार नेक होने आवश्यक हैं (फिलिप्पियों 4:8)। लोग हमें समझदारी से बातें करने वालों के रूप जानें जो भली हों। हमारी बोल-चाल सुनने वालों को आकर्षित करने वाली हो क्योंकि हमारे वचन प्रेमी हृदय से निकलते हैं (इफिसियों 4:15)।

टिप्पणियां

[1]रोमियों 12:12; इफिसियों 6:18; फिलिप्पियों 4:6; कुलुस्सियों 4:2; 1 थिस्सलुनीकियों 5:17. [2]रोमियों 15:30-32; 2 कुरिन्थियों 1:11; इफिसियों 6:19; कुलुस्सियों 4:3; 1 थिस्सलुनीकियों 5:25; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1, 2; फिलेमोन 22. [3]प्रकाशितवाक्य 3:2, 3; 16:15 भी देखें। [4]देखें 2 कुरिन्थियों 1:11; इफिसियों 1:16; फिलिप्पियों 1:3; 4:6; 1 थिस्सलुनीकियों 1:2; 5:17, 18; फिलेमोन 4. [5]मत्ती 12:29; 13:30; 14:3; 16:19; 18:18; 21:2; 22:13; 27:2; प्रेरितों 9:2, 14, 21; 12:6; 20:22; 21:11, 13, 33; 22:5, 29; 24:27 में इस के रूप मिलते हैं। [6]पीटर टी. ओ'ब्रायन, *कोलोसियंस, फिलेमोन*, वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 44 (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1982), 240. [7]विलियम हैंड्रिक्सन, *एक्सपोज़िशन ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन*, न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 182. [8]एच. सी. जी. माउल, *द एपिस्टल टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन*, द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजिज (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1893; रिप्रिंट, 1902), 136. [9]वाल्ट बाउर, *ए-ग्रीक इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट*, 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो, 2000), 200.